B.A(H) Part II Philosophy Paper III
Dr. Sachidanand Prasad
R.R.S. College, Mokama.

नैतिकता की आवश्यक मान्यताएँ

प्रत्येक शास्त्र की तरह नीतिशास्त्र की भी कुछ अपनी खास मान्यताएँ है और यदि हमलोग इन मान्यताओं को सत्य नहीं मानते है तो फिर नैतिकता का कोई प्रश्न ही उठता है। इसलिए नीतिशास्त्र मे जब कोई नैतिक निर्णय होता है तो उसका आधार वे ही मान्यताएँ होती है। नीतिशास्त्र मे नैतिकता की तीन मान्यताएँ है। (1) व्यक्तित्व (2) विवेक (3) आत्म नियंत्रण। जर्मन दार्शनिक कान्ट ने नैतिकता के तीन मान्यताओं को स्वीकार किया है। आत्मा की अमरता, स्वतंत्रता तथा ईश्वर का अस्तित्व।

(1) व्यक्तित्व:— नैतिकता का क्षेत्र वहीं है जहाँ ऐच्छिक कर्म हो। नीतिशास्त्र मे बतलाया गया है कि वैसा कर्म जो व्यक्ति के द्वारा अपनी स्वतंत्र इच्छा से उचित-अनुचित का विचार करके किया जाता है, उसे ऐच्छिक कर्म कहते है। यहाँ व्यक्तित्व का अर्थ नैतिक सिद्धांतों की जानकारी से है क्योंकि एक चेतन पुरुष

को ही उचित-अनुचित का ज्ञान रहता है। इसलिए कहा गया है कि व्यक्तित्व के बिना नैतिकता का कोई मूल्य नहीं है। व्यक्तित्व का विचार वास्तव में आत्मचेतना और आत्म-नियंत्रण का संकेत देता है। यहाँ स्पष्ट रूप से बतलाया गया है कि जबतक मनुष्य अपने कर्मों के लिए उत्तरदाई नहीं हो, तबतक नैतिकता का प्रश्न ही नहीं उठता है। अतः यह कहा जा सकता है कि 'व्यक्तित्व' नैतिक निर्णय की एक आवश्यक मान्यता है।

(2) विवेक:— मनुष्य की परिभाषा देतेहुए कहा गया है कि मनुष्य एक विवेकशील पशु है। अर्थात मनुष्य मे पशुत्व जैसे आहार, निद्रा, भय और मैथुन के साथ ही 'विवेक' भी रहता है जिसके कारण वह पशुओं से भिन्न होता है। मनुष्य मे विवेक के कारण ही नैतिक सिद्धांतों का ज्ञान संभव होता है। यही कारण है कि विवेक को नैतिकता की दूसरी मान्यता माना गया है।

③ संकल्प की स्वतंत्रता :- संकल्प की स्वतंत्रता नैतिक आचरण के लिए बहुत आवश्यक है। मनुष्य में विवेक शक्ति है जिसके कारण वह किसी भी कार्य को करने में स्वतंत्र है। उसके सामने जब कोई समस्या आती है तो वह अपनी बुद्धि या विवेक का उपयोग करते हुए अपनी स्वतंत्र इच्छा से कोई कार्य करता है। जहाँ व्यक्ति के अन्दर संकल्प की स्वतंत्रता नहीं है वैसे कर्मों पर कोई भी नैतिक निर्णय नहीं दिया जा सकता है।

जर्मन दार्शनिक कान्ट ने संकल्प की स्वतंत्रता को नैतिकता की आवश्यक मान्यता मानते हुए कहा है कि नैतिकता में मानव स्वतंत्रता नीहित है क्योंकि जब तक मनुष्य कोई कार्य करता है, वह एक क्षण में भी अपने संकल्प की स्वतंत्रता में सन्देह नहीं करता है। यदि मनुष्य स्वतंत्र नहीं हो तो कर्मों का उत्तरदायित्व उसपर नहीं होगा। इसलिए कान्ट ने कहा कि नैतिकता

के लिए स्वतंत्रता में विश्वास आवश्यक है। कान्ट ने नैतिकता के लिए आत्मा की अमरता को मानना भी जरूरी बतलाया है। हमलोगों का ऐसा विश्वास है कि अच्छे कर्मों का परिणाम अच्छा और बुरे कर्मों का परिणाम बुरा होता है। लेकिन कभी कभी हम देखते हैं कि अच्छे चरीत्रवाले दुःखी और कलुषित चरीत्र वाले सुखी नजर आते हैं। इसलिए हमें मृत्यु के बाद के जीवन में भी विश्वास करना पड़ता है। इसलिए कान्ट ने पुरस्कार और दण्ड के न्यायसंगत वितरण के लिए अमरत्व में विश्वास आवश्यक माना है।

दर्शनशास्त्र में ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार किया जाता है। कान्ट ने ईश्वर की धारणा को नैतिकता की एक आवश्यक मान्यता माना है। कान्ट का कहना है कि मनुष्य का अधिकार केवल कर्म करना है। उसी के आधार पर उसे पुरस्कार या दण्ड मिलता है इसलिए एक ऐसी सर्वशक्तिशाली शक्ति में विश्वास करना आवश्यक हो जाता है।